10

गलत कारण के लिए सही काम करना

(मत्ती 6:5-18)

कवि और नाटककार टी. एस. ने लिखा है, ''द लास्ट टैम्पटेशन सबसे बड़ा द्रोह यानी हर गलत कारण के लिए सही काम करना है।''[1] बाइबल में ऐसे लोगों को ढूंढ़ना कठिन नहीं है जिन्होंने ''बहुत गलत कारण के लिए सही काम'' किया। हेरोदेस ने ज्योतिषियों को बताया कि यीशु कहां मिलेगा, जो सराहनीय काम है, पर उसने उन्हें इसलिए बताया क्योंकि वह बालक को ढूंढ़कर उसकी हत्या करवाना चाहता था (मत्ती 2:7, 8, 16)। यहूदा ने चुम्बन के साथ यीशु को नमस्कार कहा, जो लगाव का एक प्रतीक है; परन्तु ऐसा उसने भीड़ को यीशु की पहचान करवाने के लिए किया था (मत्ती 26:48, 49)। हनन्याह और सफ़ीरा अपने से कम आशीषित भाइयों और बहनों की सहायता के लिए प्रेरितों के कदमों में रखने के लिए धन लाए थे (प्रेरितों 5:1-11)। दुखद तथ्य यह है कि उन्होंने इसे गलत कारण के लिए यानी दूसरे मसीही लोगों से प्रशंसा पाने की इच्छा से किया।

मत्ती 6 अध्याय का आरम्भ इस चेतावनी के साथ होता है: ''सावधान रहो! तुम मनुष्यों को दिखाने के लिए अपने धर्म के काम न करो'' (आयत 1क)। ''धर्म के काम करना'' सही काम है। ''मनुष्यों को दिखाने के लिए'' करना ''बहुत गलत कारण'' है। मत्ती 6:2-18 में यीशु ने गलत कारण के लिए सही करने के तीन उदाहरण दिए। पिछले पाठ में हम ने उन उदाहरणों में से पहले उदाहरण, लोगों से प्रशंसा पाने की इच्छा पर चर्चा की थी। इस पाठ में हम अन्तिम दो कारणों पर विचार करेंगे।

प्रार्थना करना (6:5-15)

प्रार्थना कैसे *न* करें (1) (आयत 5)

गलत कारण के लिए सही काम करने का यीशु का दूसरा उदाहरण प्रार्थना है। उसने पहले संकेत दिया कि प्रार्थना के अपने जीवनों में हम फरीसियों की तरह न बनें: ''जब तू प्रार्थना करे, तो कपटियों के समान न हो, क्योंकि लोगों को दिखाने के लिए अराधनालयों में[2] और सड़कों के मोड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना[3] उनको अच्छा लगता है'' (आयत 5क)।

यहूदी लोग निश्चित समयों पर प्रार्थना करते थे। प्रार्थना प्रात:काल में उनकी पहली और रात को उनकी अन्तिम गतिविधि होती थी।[4] दिन में उनके प्रार्थना करने के तीन ठहराए हुए समय थे (देखें दानिय्येल 6:10): पहला पहर (लगभग सुबह 9:00 बजे), दूसरा पहर (दोपहर के लगभग), और तीसरा पहर[5] (लगभग 3:00 बजे अपराह्न)। भक्त यहूदी उन समयों में यदि मन्दिर में जा पाते तो वे चले जाते थे (देखें प्रेरितों 3:1)। जो लोग मन्दिर नहीं जा पाते, उन्हें

उन ठहराए हुए समयों में जहां वे होते वहीं पर प्रार्थना करने के लिए रुकने को प्रोत्साहित किया जाता था। स्पष्टतया कुछ यहूदियों ने अपनी समयसारिणी इस प्रकार बना ली थी ताकि प्रार्थना का समय आने पर वे ध्यानाकर्षक स्थान जैसे चौंक या बाज़ार के कोने में हों। फिर वे अपनी प्रार्थनाएं दोहराते ताकि वे ''लोगों को दिखाई'' दे सकें।

यीशु ने कहा, ''मैं तुम से सच कहता हूं, वे अपना प्रतिफल पा चुके'' (6:5ख)। उन्हें दूसरे लोगों की प्रशंसा मिलती थी, पर इससे बढ़कर और कुछ नहीं। जैसा कि पिछले पाठ में ध्यान दिलाया गया है कि उन्हें परमेश्वर से कोई प्रतिफल नहीं मिलना था। उसने उनके जीवनों पर ''पूरी अदायगी हो गई'' लगा दिया था। कितना मूर्ख है वह व्यक्ति जो अस्थाई दावे को पाने के लिए अनन्त प्रतिफलों को हाथ से जाने देता है!

प्रार्थना कैसे करें (1) (आयत 6)

''परन्तु,'' यीशु ने कहा, ''जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा, और बन्द करके अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर; और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा'' (आयत 6)। KJV में ''जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में प्रवेश कर'' है। जब मैं लड़का था तो मुझे ''कोठरी'' शब्द समझ नहीं आता था। हमारे घर की कोठरी कपड़ों, जूतों, और बेकार समान से भरी रहती थीं; और उन में से फिनाइल की गोलियों की गन्ध आती थी।[6] प्रार्थना करने के समय, क्या मुझे बदबूदार, गन्दी सी कोठरी में जाकर दरवाजा बन्द करना पडेगा? यूनानी शब्द (*tameion*) का अनुवाद ''भीतरी कमरा,'' ''कोठरी'' आमतौर पर स्टोर वाले कमरे को कहा जाता है, जो कई घरों में दरवाजे वाला एक ही कमरा होता था और शायद एक ही कमरा जिसे ताला लगाया जा सकता था। इस शब्द का इस्तेमाल आमतौर पर घर में ''किसी भी व्यक्तिगत कमरे'' के लिए हो सकता है।[7]

''गुप्त में'' प्रार्थना के लिए व्यक्तिगत स्थान में जाने के यीशु के निर्देशों से कई सवाल खड़े होते हैं। क्या यीशु का उद्देश्य सार्वजनिक प्रार्थनाओं को बन्द करना था? क्या वह एक मसीही को किसी दूसरे मसीही के साथ प्रार्थना करने से रोकना चाहता था? दोनों प्रश्नों का उत्तर ''नहीं'' है। इस भाग में यीशु ने अपने चेलों को ''हे हमारे पिता तू जो स्वर्ग में है'' से प्रार्थना करना सिखाया। ''*हे मेरे* पिता'' नहीं बल्कि ''*हे हमारे* पिता'' जो सामूहिक प्रार्थना का संकेत देता है। मत्ती 18:19, 20 में यीशु ने परमेश्वर के सामने दो या तीन लोगों के विनती करने की बात की। प्रेरितों के काम पुस्तक मसीह के चेलों के मिलकर प्रार्थना करने के उदाहरणों से भरी थी (1:24; 4:24; 12:12)।

कई लोग सुझाव देते हैं कि कलीसिया की आराधना के लिए इकट्ठा होने पर ज़ोर-ज़ोर से प्रार्थना करना सही है, पर हमारा वचन पाठ लोगों के लिए ज़ोर-ज़ोर से प्रार्थना करने की मनाही करता है। उदाहरण के लिए, किसी भोजनालय में खाना खाने से पहले, इस विशेष मुद्दे पर हर किसी को जैसा ''वह अपने ही मन में निश्चय कर ले'' करना चाहिए (रोमियों 14:5)। अपने परिवार और मित्रों के साथ खाना खाने से पहले चाहे जहां भी हों, मैं तो प्रार्थना करता हूं, पर जितनी खामोशी से और बिना किसी के ध्यान खींचे हो सके।

यीशु के शब्दों से हम सब क्या सबक ले सकते हैं? एक तो यह हो सकता है कि खामोश,

एकांत स्थान में होने का जहां हम परमेश्वर के साथ अकेले हो सकते हैं, महत्व है। यीशु ने भी प्रार्थना के लिए ''जंगली स्थान में'' जाने की आवश्यकता समझी (मरकुस 1:35)। उस प्रासंगिकता के अलावा, यीशु की शिक्षा में ऐसे सामान्य नियम हैं, जो जहां भी हम प्रार्थना करते हैं और जब भी करते हैं, वहां लागू हो सकते हैं:

- हमें ऐसे प्रार्थना नहीं करनी चाहिए जिससे परमेश्वर के बजाय ध्यान हमारी ओर खिचे।
- हमें लोगों की परवाह करने वाले कम और परमेश्वर की परवाह करने वाले अधिक बनने की कोशिश करना आवश्यक है।
- हमें लोगों को बाहर और परमेश्वर को अन्दर करने की कोशिश करने की आवश्यकता है।[8]

यदि हम एकांत में प्रार्थना के लिए जा सकते हैं तो हमारा ध्यान कम भंग होगा, पर ऐसा हमेशा नहीं होता, या होता है? हम जहां भी हैं और जो कुछ भी कर रहे हैं, अपने मनों की ''कोठरी'' में जाकर परमेश्वर से बात कर सकते हैं। ऐसा हम गाड़ी चलाते समय, फर्श साफ करते समय या दुकान से सामान लेते समय कतार में खड़े होने पर भी कर सकते हैं।[9] लोगों को बाहर करने की आवश्यकता उन लोगों के लिए जो लोगों के बीच प्रार्थना करने में अगुआई करते हैं एक विशेष उद्देश्य है। उनका उद्देश्य वहां उपस्थित लोगों की अगुआई करना है जिस कारण उन्हें दूसरों के और उनकी आवश्यकताओं के बारे में पता होना आवश्यक है। कई बार प्रार्थना करने वाले अगुओं के लिए इस बात का ध्यान रखना आवश्यक होता है कि उनका उद्देश्य आराधना करने वाले दूसरे लोगों को प्रभावित करना न हो। डी. मार्टिन लॉयड-जोन्स ने लिखा है कि ''प्रार्थना के सार्वजनिक कार्य में मण्डली की अगुआई करने वाले व्यक्ति के लिए वास्तविक खतरा यह है कि वह परमेश्वर के बजाय मण्डली को सम्बोधित कर रहा हो सकता है।''[10] हेरल्ड फाउलर ने कहा है कि ''लोगों में प्रार्थना करने वालों को अपने मन से मानवीय सुनने वालों की हर चेतना को निकालना सीखना आवश्यक है, *कम से कम यहां तक* कि वे न तो उनकी नुक्ताचीनी से डरें और न उनसे प्रशंसा की इच्छा करें।''[11]

प्रार्थना कैसे *न* करें (2) (आयतें 7, 8)

7 और 8 आयतों में यीशु ने प्रार्थना न करने पर अतिरिक्त निर्देश दिए। पहले उसने अनुचित प्रार्थना के उदाहरण के रूप में कपटी यहूदियों का इस्तेमाल किया था (आयत 5)। अब उसने बुरे नमूने के रूप में अविश्वासी गैर यहूदियों का इस्तेमाल किया: ''प्रार्थना करते समय अन्यजातियों की नाईं[12] बक-बक न करो; क्योंकि वे समझते हैं कि उनके बहुत बोलने से उन की सुनी जाएगी'' (आयत 7)।

यीशु यह नहीं कह रहा था कि प्रार्थना कभी लम्बी नहीं हो सकती। बारह प्रेरितों का चयन करने से पहले उसने रातभर प्रार्थना की थी (लूका 6:12-16)। उसने अपने चेलों को प्रार्थना करते रहने के लिए प्रोत्साहित किया (देखें लूका 18:1-7)। न ही यीशु प्रार्थना में हर दोहराव को गलत ठहरा रहा था। गतसमनी के बाग में उसने वही प्रार्थना तीन बार दोहराई थी (देखें मत्ती

26:44)। पौलुस ने अपने ''शरीर में कांटा'' निकाले जाने के लिए तीन बार परमेश्वर से कहा (देखें 2 कुरिन्थियों 12:7, 8)। हम में से अधिकतर लोग उन अवसरों को याद कर सकते हैं, जब हम दुख, पीड़ा या परेशानी में थे; और हम ने परमेश्वर की सहायता और सामर्थ के लिए वही प्रार्थना बार-बार दोहराई। किसी प्रियजन की गम्भीर बीमारी ऐसा ही एक अवसर है। प्रभु मन से दोहराए जाने को हतोत्साहित नहीं कर रहा था।

यीशु जो बात पुकारकर कह रहा था वह ''*व्यर्थ* दोहराव''[13] यानी इस प्रकार प्रार्थना करना है, जैसे कोई मन्त्र पढ़ रहा है। अनुवादित शब्द ''बक बक'' का यूनानी शब्द (*battalogeo*) निराला है।[14] इस आयत के उदाहरणों के अलावा और कहीं इस शब्द का इस्तेमाल नहीं मिलता। इस शब्द की परिभाषा आमतौर पर ''बिना सोचे बात करना''[15] या इससे मिलती-जुलती बात के रूप में की जाती है। NEB में ''काफ़िरों की तरह बकवास न करते रहो'' है। RSV में ''व्यर्थ वाक्यांशों के ढेर न लगाओ।''

मूर्तियों की पूजा करने वालों में एक व्यक्तिगत परमेश्वर की अवधारणा नहीं थी, जो उनसे प्रेम करता हो और उनके साथ होने वाली किसी बात से परेशान हो। उनके कथित देवताओं के दूर, स्वार्थी और आमतौर पर निर्दयी दिखाया जाता था। मूर्तिपूजकों ने अपने देवताओं को सुनने और उत्तर देने के लिए कई तकनीकें बना ली थीं। उन्होंने जादुई मन्त्र बना लिए थे, जिसमें सही शब्द बोलना सही मंशा से अधिक महत्वपूर्ण था। उन्होंने ''इस उम्मीद से कि अन्तहीन दोहराव से वे सच्चे ईश्वर के नाम को किसी प्रकार उकसाकर अपनी इच्छा अनुसार पा लेंगे, ईश्वरीय नामों की लम्बी सूचियां बना लीं।''[16] उनकी कल्पना थी कि जितना वे बोलेंगे, उतना ही उनकी बात अधिक सुनी जाएगी।[17] जब एलिय्याह ने बाल के नबियों का सामना किया, तो वे ''भोर से लेकर दोपहर तक यह कहकर बाल से प्रार्थना करते रहे, कि हे बाल हमारी सुन, हे बाल हमारी सुन! परन्तु न कोई शब्द और न कोई उत्तर देने वाला हुआ'' (1 राजाओं 18:26)। एक अर्थ में यीशु ने कहा, ''तुम्हारा प्रार्थना करना मूर्तिपूजकों के अन्धविश्वास के स्तर तक न डूब जाए।''

प्रार्थना में ''बक-बक'' के सम्बन्ध में आज क्या प्रासंगिकता बनाई जा सकती है? हम पर अन्य धार्मिक समूहों के कामों पर ध्यान लगाने की परीक्षा आती है। हो सकता है कि हमें बार बार प्रार्थना के एक नमूने को दोहराने की प्रथा, माला जपते हुए मनकों की गिनती याद रखना अच्छा लगे। शायद हमें आराधना की उपासना पद्धति के उपायों का स्मरण आए जिसमें आराधना में लगभग उन्हीं शब्दों में वही प्रार्थनाएं दोहराई जाती हैं। परन्तु यदि हम अपने आप के साथ ईमानदार हैं, तो हमें मानना पड़ेगा कि हम भी दोषी हो सकते हैं। हम भी मेज़ पर या सोते समय प्रार्थना करने पर धन्यवाद करने का एक ही ढंग बना सकते हैं। जब आराधना सेवा में प्रार्थना में अगुआई करते हैं तो पसन्दीदा वाक्यांशों का इस्तेमाल करना, धार्मिक अनाप-शनाप बोलना आसान होता है। यह सोचने के दोषी भी हो सकते हैं कि ''बहुत बोलने से [हमारी] सुनी जाएगी।''

हमें यह न करने में सावधान रहना चाहिए, ''हां, मैं उस व्यकित को जानता हूं जो ऐसा करता है!'' अगला पाठ दूसरों के न्याय करने के पाप पर एक शक्तिशाली वचन होगा (मत्ती 7:1-5)। हम में से हर किसी को यह पूछते हुए कि ''*मेरा* मन कैसा है? क्या *मैं* व्यर्थ बक-बक करने का दोषी हूं? क्या *मैंने* कभी बिना सोचे प्रार्थना की है?''

इसलिए यीशु ने कहा, ''तुम उनके समान न बनो'' (6:8क) यानी उन मर्तिपूजकों के समान न बनो, जो ''समझते हैं कि उनके बहुत बोलने से उन की सुनी जाएगी'' (आयत 7ख)। ''क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने से पहिले ही जानता है, कि तुम्हारी क्या आवश्यकता है'' (आयत 8)। स्थान मिला तो हम ''तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने से पहले जानता है कि तुम्हारी क्या आवश्यकता है'' के अद्‌भुत शब्दों पर बात करेंगे। परमेश्वर हमारा पिता है! वह हमें जानता है! वह हमारी आवश्यकताओं को जानता है! परन्तु ध्यान उन बातों पर लगाना आवश्यक है, जो यीशु कहता है। जब हम प्रार्थना करते हैं तो ऐसा नहीं कि हम प्रार्थना को खींचते रहें, खींचते रहें। परमेश्वर प्रेमी पिता है, और वह जानता है कि हमारी क्या आवश्यकता है।

किसी ने पूछा है, ''पर यदि परमेश्वर जानता है कि हमारी क्या आवश्यकता है, तो प्रार्थना करने की क्या आवश्यकता है?'' इस प्रश्न के कई उत्तर हैं। मैं दो उत्तर बताता हूं। पहला, अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए परमेश्वर से कहना ही प्रार्थना का कारण नहीं है। बेशक वह हमारी आवश्यकताओं को जानता है, इसके बावजूद हमें उसकी स्तुति के लिए और उसकी आशिषों के लिए धन्यवाद करने के लिए प्रार्थना में उसके पास जाना आवश्यक है। दूसरा, बेशक वह हमारी आवश्यकताओं को जानता है पर उसने हम से उनके लिए प्रार्थना करने को कहा है। परमेश्वर चाहता है कि *हमें* पता हो कि हमें आशिषें कहां से मिली हैं और हम उन्हें यूं ही कभी न समझें। किसी पिता को अपने बच्चों की आवश्यकताओं का पता होने के बावजूद उसकी इच्छा होगी कि वे आएं और उससे बात करें।

कैसे प्रार्थना करें (2) (आयतें 9-15)

यदि हमें ''अन्यजातियों की नाईं प्रार्थना'' नहीं करनी चाहिए तो फिर कैसे करनी चाहिए? यीशु ने इसका उत्तर वह देते हुए दिया जिसे ''प्रभु की प्रार्थना'' कहा जाता है। इसे ''चेलों की प्रार्थना'' या ''नमूने की प्रार्थना'' नाम देना बेहतर होगा। बहुतों को ये शब्द पता होंगे:

''अत: तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो;
'हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है,
तेरा नाम पवित्र माना जाए।
तेरा राज्य आए।
तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है,
वैसे ही पृथ्वी पर भी हो।
हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे।
और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है,
वैसे ही तू हमारे अपराधों को भी क्षमा कर।
और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा;
[क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं।' आमीन।]
इसलिए यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा।
और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध

क्षमा न करेगा'' (आयतें 9-15)।

अगले पाठ में हम 9 से 15 आयतों का अध्ययन करेंगे। अभी के लिए, केवल इतना ध्यान रखें कि अन्यजातियों की लम्बी-लम्बी, स्वचलित प्रार्थनाओं के विपरीत, यह प्रार्थना छोटी और बहुत ही व्यक्तिगत है।

उपवास करना (6:16-18)

उपवास कैसे न करें (आयत 16)

यह हमें धर्म के काम मनुष्यों को दिखाने के लिए कि यीशु के तीसरे उदाहरण उपवास रखने पर ले आता है। उसने कहा, ''जब तुम उपवास करो, तो कपटियों के समान तुम्हारे मुंह पर उदासी न छाई रहे, क्योंकि वे अपना मुंह बनाए रहते हैं, कि लोग उन्हें उपवासी जानें'' (आयत 16क)। अनुवादित शब्द ''उपवासी'' (*nesteuo*) का अर्थ बिना खाए रहना है।[18] इस शब्द का इस्तेमाल दिन भर यीशु की सुनने के बाद भूखे लोगों के लिए चार हज़ार लोगों को खाना खिलाने की कहानी में इस्तेमाल किया गया है (देखें मत्ती 15:32; KJV और NASB की तुलना करें)।[19] संसार के कुछ भागों में, दिन के पहले भोजन को ''ब्रेकफास्ट'' (''फास्ट यानी उपवास को तोड़ना'') कहा जाता है क्योंकि रात भर कोई खाना नहीं खाया गया होता।

यहूदियों द्वारा उपवास रखना एक आवश्यक आत्मिक अभ्यास माना जाता था। ''मूसा की व्यवस्था में कभी प्रत्यक्ष रूप में उपवास रखने की सिफ़ारिश नहीं की गई''[20] परन्तु प्रायश्चित के दिन यहूदियों को अपने आपको नम्र करने को कहा जाता था (लैव्यव्यवस्था 16:29-34; आयत 31 पर ध्यान दें)।[21] अपने आपको नम्र करने की व्याख्या उपवास रखने सहित की जाती थी। भजन संहिता 35:13 में दाऊद ने लिखा, ''मैं उपवास कर-कर के दुख उठाता रहा।'' समय बीतने पर यहूदियों ने नये साल के आरम्भ और यहूदी इतिहास की प्रसिद्ध आपदाओं की वर्षगांठों जैसे राष्ट्रीय उपवास रखने के और दिन जोड़ लिए थे।[22] विशेष परिस्थितियों में उपवास का राष्ट्रीय दिन मनाए जाने को हा जाता था (देखें 1 शमूएल 7:5, 6)। इसके अलावा व्यक्तिगत तौर पर भी लोग उपवास रखते थे (उदाहरण के लिए देखें 2 शमूएल 1:12; 12:16; नहेम्याह 1:4)। पुराने नियम में उपवास रखना आमतौर पर दीनता, प्रायश्चित या शोक को दर्शाता था।

यीशु के समय तक, फरीसियों ने प्रत्येक सप्ताह उपवास के दो दिन जोड़ दिए थे (देखें लूका 18:12)। ये उपवास सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक रहते थे।[23] ऐतिहासिक स्रोतों से पता चलता है कि दो दिन वही हैं, जिन्हें हम मंगलवार और गुरुवार करते हैं। यहूदियों के लिए ये दिन मण्डी के दिन होते थे यानी इन दिनों में कई लोग नगर में आते थे। इससे फरीसियों के लिए उपवास का ''दिखावा'' करने के लिए बड़ी मात्रा में श्रोता मिल जाते थे।

यीशु ने कहा कि उपवास रखने के समय ये कपटी, ''मुंह पर उदासी''[24] ले आते थे और अपनी शकल की परवाह नहीं करते थे। वे मुंह नहीं धोते थे या बाल नहीं बनाते थे। वे गन्दे, सिल्वटों वाले कपड़े पहनते और अपने आपको बहुत दुखी दिखाते थे। अपने सिर पर राख डालकर वे टाट भी ओढ़ते होंगे ताकि लोग उन्हें देख सकें। यह सब लोगों का ध्यान खींचने के लिए था कि वे कितने आध्यात्मिक हैं।

फिर, यीशु ने कहा, ''मैं तुम से सच कहता हूं, वे अपना प्रतिफल पा चुके हैं'' (मत्ती 6:16ख)। ''क्योंकि मनुष्यों की ओर से प्रशंसा उनको परमेश्वर की ओर से प्रशंसा से अधिक प्रिय लगती थी'' (यूहन्ना 12:43) और उन्हें केवल मनुष्यों की ओर से प्रशंसा ही मिलती थी।

उपवास कैसे करें (आयतें 17, 18)

यीशु ने कहा कि ऐसे कपटी प्रदर्शन उसके चेलों की पहचान नहीं हैं:

> परन्तु जब तू उपवास करे तो अपने सिर पर तेल मल और मुंह धो, ताकि लोग नहीं, परन्तु तेरा पिता जो गुप्त में है, तुझे उपवासी जाने। इस दशा में तेरा पिता जो गुप्त में देखता है तुझे प्रतिफल देगा (आयतें 17, 18)।

सिर पर तेल मलना और मुंह धोना यहूदियों की साफ़ सुथरा होने की सामान्य बात थी। यीशु कह रहा था, ''जब तू उपवास करे तो सामान्य व्यवहार करे। इस बात की ओर ध्यान दिलाने के लिए कुछ न कर कि तूने उपवास रखा है।''[25] आज यीशु कह सकता है, ''अपनी सुबह की सामान्य दिनचर्या में जा। मुंह धो, दांत साफ़ कर, बाल बना।''[26]

इतना कहने के बावजूद हम अभी भी उपवास रखने और मसीही लोगों के रूप में हमारे जीवनों को यीशु के निर्देश से प्रभावित होने के सवाल पर ही हैं। ध्यान दें कि यीशु ने यह नहीं कहा कि ''*यदि* तुम उपवास करो,'' बल्कि उसने कहा, ''*जब* तुम उपवास करो।'' यह माना गया था कि उसके चेले उपवास रखेंगे। कइयों का मानना है कि उपवास रखना मसीही व्यवहार की बीत चुकी बात है। वे आरम्भिक सदियों के उन भक्त लोगों की ओर ध्यान दिलाते हैं, जिन्होंने उपवास रखने में बहुत समय बिताया और सुझाव देते हैं कि हमें भी आज वैसा ही करना आवश्यक है।

नया नियम उपवास रखने पर क्या कहता है? बहुत अधिक नहीं।[27] सबसे लम्बा हवाला मरकुस 2:18-20 (देखें मत्ती 9:14, 15; लूका 5:33-35) है:

> यूहन्ना के चेले, और फरीसी उपवास करते थे; सो उन्होंने आकर उस से यह कहा; कि यूहन्ना के चेले और फरीसियों के चेले क्यों उपवास रखते हैं? परन्तु तेरे चेले उपवास नहीं रखते। यीशु ने उन से कहा, जब तक दूल्हा बारातियों के साथ रहता है क्या वे उपवास कर सकते हैं? सो जब तक दूल्हा उने साथ है, वे उपवास नहीं कर सकते। परन्तु वे दिन आएंगे, कि दूल्हा उन से अलग किया जाएगा; उस समय वे उपवास करेंगे।

इससे हमें पता चलता है कि यूहन्ना के चेले उपवास रखते थे, पर यीशु के चेले नहीं रखते थे। एक बार फिर, यीशु की ओर से हमारे पास यह मान्यता है कि उसके जाने के बाद उसके चेले उपवास रखेंगे। यीशु की ''बाद की व्याख्या उपवास को मसीही जीवन का आवश्यक तो नहीं पर वैध कार्य बनाने के रूप में की गई है।''[28]

क्या यीशु के स्वर्ग में वापस चले जाने के बाद उसके चेलों ने उपवास रखा? यदि हमारे पास निजी तौर पर मसीही लोगों के उपवास रखने की बात नये नियम में है तो मुझे उसका पता नहीं है।[29] मण्डली के रूप में उपवास रखने के हमारे पास दो उदाहरण हैं। अन्ताकिया में

मिशनरी बनाकर कलीसिया द्वारा बरनबास और शाऊल को भेजने से पहले, उन्होंने ''उपवास और प्रार्थना'' की (प्रेरितों 13:3; देखें आयतें 1-3)। मण्डलियों ने एल्डरों की नियुक्ति के समय ''उपवास सहित प्रार्थना'' (प्रेरितों 14:23) की। परन्तु हमने इन मण्डलियों के उपवास रखने पर विस्तार से नहीं बताया गया है। हमें नहीं मालूम कि वे कितनी देर तक बिना खाए रहे। हमें नहीं मालूम कि उन्होंने उपवास और प्रार्थना का विशेष समय ठहराया था या मण्डली की प्रार्थना सभा के दौरान स्वाभाविक रूप में उपवास हो गया।

जानकारी की कमी उपवास के विषय को समझने की कोशिश करने में एक समस्या है। निर्धनों की सहायता करने के सम्बन्ध में हमें आज्ञाएं और निर्देश मिलते हैं (देखें 2 कुरिन्थियों 8; 9)। प्रार्थना के सम्बन्ध में हमें कई आज्ञाएं और निर्देश मिलते हैं (उदाहरण के लिए देखें मत्ती 7:7-11; 1 थिस्सलुनीकियों 5:17; इफिसियों 6:18)। परन्तु उपवास रखने के विषय पर हमारे पास कोई आज्ञा नहीं है, केवल अपनी ओर ध्यान न खींचने का आदेश है।

उपवास रखने वाले लोग मन की शुद्धता से लेकर गहरी आत्मिकता की समझ से लेकर कई शारीरिक और आत्मिक लाभ गिनवा देते हैं। परन्तु सब की अलग-अलग पाचन क्रिया और व्यक्तित्व होता है, इसलिए उपवास रखने की कोशिश करने वाले सभी लोगों को सकारात्मक आत्मिक अनुभव नहीं मिलता। इसके अलावा गैर मसीही समूह अपने ऊपर थोपे हुए उपवासों के वैसे ही परिणाम होने का दावा करते हैं,[30] सो मिलने वाले परिणामों में विशेष रूप से मसीही उपवास की कोई विशेष बात नहीं है। यदि उपवास रखने से अपने आप में, अपने आप आत्मिक लाभ मिलते हैं तो यह समझना कठिन है कि यीशु ने उनके साथ रहते हुए अपने चेलों को उपवास रखने पर ज़ोर क्यों नहीं दिया।

आमतौर पर कहा जाता है कि उपवास रखना अपने आपको अनुशासन में रखने का एक ढंग है। बेशक यह सही है कि हम में से कुछ लोगों को खाने की बात में अपने आपको और अनुशासित करना आवश्यक है। परन्तु अपने आपको अनुशासित करना तो हर समय, हर रोज़ आवश्यक है, जबकि नये नियम में उपवास पर थोड़ी सी जानकारी जो हमारे पास है उसमें सुझाव मिलता है कि यह सामान्य घटनाओं से परे था। जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने सुझाव दिया है:

> [उपवास रखना] उतना लगातार नहीं है, ... जितना [यह] कभी-कभी और विशेष प्रबन्ध है, ताकि जब हमें किसी विशेष दिशा या आशीष के लिए परमेश्वर को ढूंढ़ना आवश्यक हो तो हम ऐसा करने के लिए भोजन और अन्य रुकावटों से मुंह मोड़ लेते हैं।[31]

नये नियम की कलीसिया में, उपवास रखना *आत्म-अनुशासन* के बजाय *आत्म-इनकार* की अभिव्यक्ति था। यह आत्मिक प्रथाओं की अध्याय के अन्त वाले आदेश का व्यावहारिक प्रदर्शन था: ''इसलिए पहिले तुम परमेश्वर के राज्य और धर्म की खोज करो'' (मत्ती 6:33)। कई अवसरों पर मसीही लोग अपने आपको भोजन तथा अन्य जायज़ आनन्दों से दूर रखते थे क्योंकि जो वे प्रभु के लिए कर रहे होते थे वह अधिक आवश्यक होता था।[32]

कई आधुनिक उदाहरण ध्यान में आते हैं।[33] मुझे उन लोगों का ध्यान आता है जो दूसरों को मसीह का सुसमाचार सिखाने का अवसर मिलने पर खाना-पीना भूल जाते हैं। ऐसे भी लोग हैं जिन्हें ज़रूरतमन्दों की सेवा करते समय भोजन या समय या कीमत का जो वे चुका रहे होते

हैं, ध्यान ही नहीं रहता। दूसरे, मुझे कहते हुए दुख होता है कि ऐसी बातों को प्राथमिकता नहीं देते। पवित्र लोगों के साथ इकट्ठा होने के सम्बन्ध में (इब्रानियों 10:25) उन्हें आराधना करने या परमेश्वर की महिमा करने से बढ़कर सोने या खाना खाने या मनोरंजन की अधिक चिन्ता रहती है।

अपनी प्राथमिकताओं पर काम करने के अलावा, यीशु की बातें उपवास रखने पर आपके जीवन को और कैसे प्रभावित करें? मैं आपके लिए इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता। आपको देखने की इच्छा हो सकती है कि आप पर इसके क्या सकारात्मक प्रभाव हैं। यदि किसी मण्डली में कोई संकट है, तो अगुओं को चाहिए कि उपवास और प्रार्थना करने के लिए कहें। परन्तु जो यीशु ने कहा उस बात को न भूलें। जब आप प्रार्थना करते हैं, तो दिखावे के लिए और अपनी ओर ध्यान अकर्षित करने के लिए न करें। तभी ''तेरा पिता जो गुप्त में है, तुझे उपवासी जानेगा। इस दशा में तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।''

सारांश

उम्मीद है कि हम यीशु के उदाहरणों को समझने की कोशिश में इतना नहीं खोए कि हम इस मूल संदेश से भटक जाएं कि हम चौकस रहें कि गलत कारण के लिए सही काम न करें। यह संदेश मुझे परेशान करता है। सिखाने या प्रचार करने के बाद मुझे अच्छा लगता है कि लोग मेरे संदेश के लिए मुझे धन्यवाद दें। अपने लेखन के सम्बन्ध में मुझे लोगों से यह सुनना अच्छा लगता है कि इससे मुझे सहायता मिली। यदि कोई मेरे प्रयासों की सराहना नहीं करता तो मैं कई बार निराश हो जाता हूं। इसलिए मुझे अपने आप से पूछना है कि ''मैं जो कुछ करता हूं वह प्रभु के लिए *क्यों* है? क्या मेरी मंशा साफ़ है?'' ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर मेरे पास नहीं होता।

यीशु ने उन्हें जिनकी उसने निन्दा की ''कपटी'' कहा (आयतें 2, 5, 16)। आमतौर पर हम कपटी उनको कहते हैं जो जान-बूझकर वह बनते हैं जो वे होते नहीं हैं। परन्तु जिन्हें यीशु ने कपटी कहा वे सम्भवतया सच्चे दिल से मानते थे कि वे परमेश्वर की इच्छा को पूरा कर रहे हैं (देखें लूका 18:11, 12)। वे कपटियों की सबसे त्रासद किस्म *भ्रमित* कपटी थे। परमेश्वर हमें भ्रमित कपटी न बनने में सहायता करे। परमेश्वर हमें न केवल सही काम करने बल्कि उन्हें सही कारण से करने में भी सहायता करे।

टिप्पणियां

[1]टी. एस. इलियट, *मर्डर इन द कैथेड्रल;* हेरल्ड हेजलिप, *डिसाइपलशिप,* दि टवंट्यिथ सेंचुरी सरमन्स सीरीज़ (अबिलेन, टैक्सस: बिब्लिकल रिचर्स प्रैस, 1977), 59. [2]आराधनालय में प्रार्थना में अगुवाई करने वाला व्यक्ति सामने खड़ा हो जाता है, आमतौर पर उस जगह पर जहां पवित्र पुस्तकें रखी होती थीं। [3]प्रार्थना करने के लिए खड़ा होने में कोई बुराई नहीं है (देखें लूका 18:10-14)। शरीर की स्थिति के बावजूद परमेश्वर को स्वीकार्य प्रार्थना की जा सकती है। [4]यहूदी लोग लगभग हर अवसर या परिस्थिति के लिए प्रार्थना की सिफारिश भी करते थे। [5]तीसरे पहर के सम्बन्ध में देखें प्रेरितों 3:1. [6]फिनाइल की गोलियां कंच्चों के आकार की छोटी, सफेद गोलियां होती हैं। वे (कपूर जैसी) एक चीज़ की बनी होती हैं, जो कीड़ों को भगाती है। [7]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर, एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस

नेल्सन पब्लिशर्स,1985), 95. [8]फ्रैंक एल. कोक्स, *सरमन नोट्स ऑन द सरमन ऑन द माउंट* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1955), 15. [9]इस वाक्य को जहां आप रहते हैं वहां के औसत आदमी की प्रतिदिन की गतिविधियों के अनुसार बदल लें। [10]डी. मार्टिन लायड-जोन्स, *स्टडीज़ इन दि सरमन ऑन द माउंट,* अंक 2 (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1959), 46.

[11]हेरल्ड फाउलर, *मैथ्यू 1,* बाइबल स्टडीज़ टैक्सबुक सीरीज़ (जॉप्लिन, मिजोरी: कॉलेज प्रैस, 1968), 337. [12]KJV में यहां ''काफ़िर'' है। ''अन्यजातियां'' जिनकी यीशु ने बात की, सच्चे परमेश्वर में विश्वास नहीं रखते थे और उस अर्थ में वे ''काफ़िर'' थे। [13]KJV में यहां ''व्यर्थ पठन'' है। इस आयत में प्रयुक्त ''व्यर्थ'' शब्द का अर्थ ''खाली, बेकार'' है। [14]कइयों का मानना है कि यह एक अनुकरणात्मक शब्द यानी ऐसा शब्द है, जिसका स्वर इसके अर्थ का सुझाव देता है। यह ''बकवास'' शब्द से मिलता-जुलता है, जिसका स्वर किसी के व्यर्थ में बातें करने, जैसा है। [15]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर एर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* चौथा संस्करण, संशो. व विस्तार, विलियम एफ़. अर्ंट एण्ड एफ़. विलबर, गिंगरिच (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1957), 137. [16]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनेशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 55. [7]NEB में है ''... काफ़िर लोग कल्पना करते हैं कि जितना वे अधिक बोलेंगे, उतनी ही उनकी अधिक सुनी जाती है'' (आयत 7)। [18]वाइन, 228. [19]इससे सम्बन्धित शब्द *astia* का इस्तेमाल प्रेरितों 27:21, 33 में हुआ है। *Astia* और *nesteuo* नकारात्मक पूर्व सर्ग के साथ ''खाना'' (*esthio*) के लिए शब्द के पूर्वसर्ग से बने हैं। (वही, 227-28.) [20]फाउलर, 358.

[21]लैव्यव्यवस्था 23:26-32; गिनती 29:7 भी देखें। नये नियम में प्रायश्चित के दिन को प्रेरितों 27:9 में ''उपवास'' कहा गया है। [22]उनमें से कुछ अवसरों की तिथियां 2 राजाओं 25:1, 3, 25 और यिर्मयाह 52:12, 13 में मिल सकती हैं। [23]भोजन सूर्योदय से पहले या सूर्यास्त के बाद किया जा सकता था। दिन भर के उपवासों के पुराने नियम के उदाहरणों के लिए , देखें न्यायियों 20:26; 1 शमुएल 14:24; 2 शमुएल 1:12; 3:35. [24]''मुंह पर उदासी'' *aphanizo* शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ ''पहचानने के योग्य न होना'' है (अर्ंट एण्ड गिंगरिच, 124)। [25]कइयों का सुझाव है कि सिर पर तेल मलना जश्न का संकेत देता है। परन्तु यह किसी का ध्यान भी खींचेगा। इसे सुबह रोज तेल लगाने के भाग के रूप में मानना बेहतर है। [26]जहां आप रहते हैं वहां रोज प्रात: बाल बनाने के लिए उपयुक्त वाक्य बना लें। [27]उपवास पर विभिन्न वचनों में लूका 2:37 और मत्ती 4:2 हैं। मत्ती 17:21; मरकुस 9:29; प्रेरितों 10:30 और 1 कुरिन्थियों 7:5 जैसे वचनों में KJV में ''उपवास'' के लिए यूनानी शब्द है। [28]आर. के. हेरिसन, ''फास्ट,'' *दि इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संशो., संस्क. ज्योफ्री ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 2:284. [29]दूसरी सदी में परमेश्वर की प्रेरणा रहित लेखों में मसीही उपवास के कई हवाले मिलते हैं पर नये नियम में उनसे मेल खाता कोई हवाला नहीं है। कइयों ने ''उपवास करने'' और ''भूख-प्यास'' होने के पौलुस के शब्दों को (2 कुरिन्थियों 6:5; 11:27) इस प्रमाण के रूप में लिया है कि वह आत्मिक अभ्यास के रूप में आमतौर पर उपवास रखता था (दोनों वचनों में ''उपवास'' के लिए यूनानी शब्द इस्तेमाल हुआ है) परन्तु दोनों वचन पौलुस के खाने के बिना रहने को नकारात्मक संदर्भ में लेते हैं, जैसे उसे मसीह के काम के लिए कुछ सहना पड़ा। [30]गैर मसीही लोगों के उपवास के बाइबली उदाहरणों के लिए देखें दानिय्येल 6:18 (बाबुल का राजा), योना 3:5 (नीनवे के लोग) और प्रेरितों 23:12, 14 (कलीसिया के स्थापित होने के बाद यहूदी लोग)।

[31]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ द समरन ऑन द माउंट,* द बाइबल स्पीक्स, टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1978), 137. [32]मसीही लोगों के आत्मिक उद्देश्य के लिए अपना इनकार करने के वैध आनन्द के एक और उदाहरण के लिए देखें 1 कुरिन्थियों 7:5 जो प्रार्थना के लिए अपने आप को देने के लिए कुछ समय के लिए मसीही दंपत्ति के शारीरिक सम्बन्धों से दूर रहने की बात करता है। [33]जहां आप परिश्रम करते हैं वहां की परिस्थिति के अनुकूल बनाने के लिए इस पद्य को बदल लें।